UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 4 बालकः ध्रुवः (अनिवार्य संस्कृत)

अयं बालकः ..... आसीत्।

हिन्दी अनुवादः
यह बालक ध्रुव है। इसके पिता महाराज उत्तानपाद थे। उसकी पत्नी सुनीति रूपवती, गुणवती और पतिव्रता नारी थी। सब सुखों से सम्पन्न होकर भी राजा सन्तानहीन होने से चिन्तातुर थे। बुद्धिमती सुनीति ने उससे दूसरा विवाह करने के लिए कहा। उसके विशेष आग्रह पर राजा ने दूसरा विवाह सुरुचि के साथ किया। सुरुचि रूपवती परन्तु कुटिल हृदय वाली थी। विवाह के बाद उसका एक पुत्र हुआ। राज़ी ने 'उत्तम' ऐसा उसका नाम रखा। कालातंर में सुनीति ने भी एक पुत्र को जन्म दिया। इसका नाम ध्रुव था।

एकदा नृपः .....अभवत्।।

हिन्दी अनुवादः
एक दिन राजा उत्तम को गोद में बैठाकर खिला रहे थे। उसी समय ही पाँच वर्षीय बालक ध्रुव वहाँ आया। वह भी राजा की गोद में बैठना चाहता था किन्तु राजा ने उसे नहीं बैठाया। तब वहीं बैठी विमाता सुरुचि ने ध्रुव से कहा, "तुम तप के बल से जब मेरी कोख से जन्म लोगे, तब राजा की गोद में बैठने योग्य होगे।" इससे अपमानित होकर ध्रुव ने सभी बातों को अपनी माता से कहा और पूछा, "राजसिंहासन से भी उच्च स्थान क्या है? मैं उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करूंगा। " चकित माता ने कहा, "भगवान ही उस स्थान को देने में समर्थ हैं, तुम उसे ही भजो।" माता की आज्ञा से ध्रुव वन को चला गया। तब रास्ते के बीच में नारद उसे मिले। इसके बाद नारद के उपदेश से उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति हुई। आज भी आकाश में ध्रुव की ध्रुवतारा नाम से ऊँची स्थिति है। यह देश धन्य है, जहाँ ऐसा बालक हुआ।

https://www.evidyarthi.in/